तर्ज--पीतल की मोरी गागरी

सदगुरू की बड़ी मेहरबानी,
हमसे पहचानी न गई है
उनकी वाणी जगाने है आयी,
हमनेसुनने की कोशिश ना की
1--खेल में जाके तुम भूल जाओगी
मैं जगाऊंगा फिर भी न जगोगी
अपना वायदा वो निभा रहे हैं
हमको मिलने की फुरसत नही है
2--हमने समझा कि ऐसा न होगा
क्या कभी हमसे ऐसा भी होगा
अपने प्रीतम जगाने है आये
बात सुनने की आदत नही है
3--उनके कृपा के गुण गा सकूं ना
शर्म से सर उठा मैं सकूं ना
उनके एहसान है हमपे इतने
सोचने की भी हिम्मत नही है

Nijanand App